दर्शनशास्त्र का इतिहास
38 स्पिनोज़ा (जारी), लाइबनिज़
व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

ठीक है। आज मैं दो बातें करना चाहता हूँ। एक, शॉर्ट में, जो मैं पिछले शुक्रवार को स्पिनोज़ा के तर्क और भावना पर कहने वाला था, उसे शॉर्ट में बताना।

इस बातचीत से मुझे लगा कि आप स्पिनोज़ा की सोच के मुख्य पहलुओं से काफी परिचित हो रहे हैं, और इसलिए हम इसे आसानी से संक्षेप में बता सकते हैं। फिर इस बात पर बात शुरू करते हैं कि इस हफ़्ते के बाकी समय में हम किस पर ध्यान देंगे। तो, तर्क और भावना पर, फिर स्पिनोज़ा में, मैंने बोर्ड पर चार बातें लिखी हैं जिन पर मैं ज़ोर देना चाहता हूँ।

शुक्रवार को जो आउटलाइन मैंने बनाई थी, वह वैसी नहीं है क्योंकि मैंने इसे छोटा और छोटा करने का फैसला किया था, लेकिन मुझे लगता है कि यही है। जैसा मुझे याद है, हम स्पिनोज़ा के डिटरमिनिज़्म के बारे में बात करके चर्चा में आए थे, जो उनके तर्क और भावनाओं दोनों के नज़रिए में पहले से ही माना जाता है । और हम यह आसानी से देख सकते हैं जब हम भावना की उनकी परिभाषा पर ध्यान देते हैं, जिसे आप चाहें तो खुद भी देख सकते हैं।

यह एंथोलॉजी में 134वें नंबर पर है। इमोशन शरीर का एक बदलाव है जो उसकी एक्टिव पावर को बढ़ाता या घटाता है। अब, इसमें कुछ बातें हैं जिन पर ज़ोर देना है ।

पहली बात, इमोशन फिजिकली होता है। ठीक है? यह एक बॉडी मॉडिफिकेशन है। मॉडिफिकेशन बॉडी के होने का एक टेम्परेरी तरीका है।

याद रखें, सीमित तरीके। तो भावना किसी के शरीर में होने का एक टेम्परेरी तरीका है। और इसका संबंध शरीर की एक्टिव पावर से है, जो इसे या तो बढ़ाती है या घटाती है।

शरीर की ताकत? हाँ, वह कारण एनर्जी जिससे शरीर की एक हालत के बाद दूसरी हालत आती है। तो जब एड्रेनालाईन बहता है, तो ताकत बढ़ जाती है । जब आप इमोशनली बहुत निराश महसूस करते हैं, तो ताकत कम हो जाती है।

इमोशन शरीर का एक बदलाव है जो एक्टिव पावर को बढ़ाता या घटाता है। अब, यह बेसिक डेफिनिशन है। तो यह साफ़ है कि इमोशन, फिर, फिजिकली होते हैं।

लेकिन ध्यान रखें कि हर शारीरिक बदलाव के साथ, हमारे होने का दूसरा पहलू भी है। कहने का मतलब है, अगर सोच और शारीरिक फैलाव होने के दो गुण हैं, तो शारीरिक भावना के हिसाब से, चेतना की एक बदलती हुई अवस्था होती है जिसे हम महसूस करते हैं। और इसलिए अगर हम भावनाओं की बात कर रहे हैं क्योंकि हम उनके बारे में जानते हैं, तो हम भावनाओं की बात कर रहे हैं।

या अगर इमोशंस हम पर मेंटली असर करते हैं, तो हम उन्हें पैशन कहते हैं, जिसमें हम मेंटली पैसिव होते हैं। तो शरीर में बदलाव, शरीर की एक्टिव पावर का बढ़ना या घटना, चेतना की बदलती हालत के साथ होता है। अब, वह इस प्रोसेस के कॉन्शस साइड में शामिल होने के बारे में, विल और इंटेलेक्चुअल दोनों के बारे में बात करते हुए बहुत साफ़ हैं।

लेकिन इमोशन असल में एक फिजिकल चीज़ है, और हमने पिछली बार डिस्कशन में इसके बारे में बात की थी, जिसे स्पिनोज़ा कॉनैटस कहते हैं, वह ड्राइविंग एनर्जी जिसे हम अलग-अलग कॉनेटिव फंक्शन्स की इच्छा या चाहत से जोड़ते हैं, जैसा कि हम उन्हें साइकोलॉजिकल भाषा में कॉनेटिव कहते हैं। तो इमोशन ही वह चीज़ है जो इसके पीछे है। भूख, हाँ।

और होश में, चाहना और इच्छा करना वे तरीके हैं जिनसे हम इन इमोशनल स्टेट्स को बताते हैं, जैसे चाहना या न चाहना, पसंद करना या नापसंद करना, वगैरह। तो, इमोशन की डेफिनिशन, तो, काफी साफ़ है। अब, स्पिनोज़ा की इमोशन्स की थ्योरी के बारे में सबसे ज़रूरी बात यह है कि इमोशन्स हमें बांधे रखते हैं।

और आपने शायद ध्यान दिया होगा कि उनके बड़े काम, द एथिक्स, के आखिरी दो हिस्सों के नाम एक के बाद एक, ह्यूमन बॉन्डेज और ह्यूमन फ्रीडम हैं। यह लूथर या उसके जैसे किसी की तरह लगता है, लेकिन ह्यूमन बॉन्डेज। हाँ, क्योंकि जब हमारे होश में हमारे पास काफ़ी आइडिया नहीं होते , यानी, जब हमारी सोच में क्लैरिटी और साफ़-साफ़ नहीं होता, तो हमारे पास इमोशनल फीलिंग में बुना हुआ एक कन्फ्यूज़्ड आइडिया होता है, और यह इमोशनल फीलिंग ही है जो होश को चलाती है, न कि क्लैरिटी और साफ़-साफ़ जो राज करना चाहिए।

और इसलिए, भावनाओं का बंधन, साफ़ और अलग विचारों की कमी, गैर-मौजूदगी से पैदा होता है। और इसी तरह, भावनाओं से चलने से आज़ादी, इंसानी आज़ादी साफ़ और अलग विचारों से आती है। विचारों की साफ़ सोच उन जुनून को दूर करती है जो वरना हमें चलाते, न कि साफ़ सोच।

तो यह उनके एथिक्स के डेवलपमेंट में उस सद्गुण को फॉलो करेगा, और आप इसे पेज 145, 148, वगैरह पर फॉलो कर सकते हैं। सद्गुण एक ऐसा जीवन होगा जो इमोशन से कंट्रोल होने के बजाय, तर्क से चलेगा। इमोशन पर तर्क का राज।

अच्छाई एक ऐसी चीज़ है जो हम बुराई के डर से नहीं, बल्कि जो हम कर रहे हैं या जो हम करने वाले हैं, उसके नतीजों की साफ़ और साफ समझ से सीखते हैं। और उस समझदारी भरी ज़िंदगी का मतलब है कि हमें उन वजहों के बारे में साफ़ होना होगा जो हमारे हालात तय कर रही हैं। हमारे अंदर काम करने वाली वजहें शारीरिक, भावनात्मक और हमारे आस-पास की दुनिया में काम करने वाली वजहें हैं , क्योंकि सभी एक ही चीज़ का हिस्सा हैं जो सबको शामिल करती है।

दूसरे शब्दों में, यह प्रकृति के कारण बनने वाले सिस्टम को समझने और उन्हें वैसे ही स्वीकार करने से होता है, जैसा कि हम मानते हैं, कुछ ऐसा जिसका हम विरोध नहीं कर सकते। प्राकृतिक नियमों को स्वीकार करने से ही हमें इमोशनल परेशानियों से आज़ादी मिलती है। और यहीं से वह

शांत नैतिकता सामने आती है, आप देखिए, क्योंकि इसी स्वीकारोक्ति से मन की शांति मिलती है।

इस मायने में, अच्छाई, यानी समझदारी से ज़िंदगी जीना, अपना ही इनाम है। और भविष्य में किसी इनाम की ज़रूरत नहीं है। अच्छाई अपना ही इनाम है।

अब, वह उस समझदारी भरी मंज़ूरी की बात करते हैं। लेकिन प्रकृति के व्यवस्थित होने को दिमाग से मानना, ईश्वर या प्रकृति, दोनों में से किसी एक को दिमाग से मानना है। और प्रकृति की व्यवस्थित शान से प्यार करने में, इंसान ईश्वर से प्यार कर रहा होता है।

और इसलिए, यह सबसे ऊँची अच्छाई है जिसे वह भगवान के लिए दिमागी प्यार कहते हैं, बस प्रकृति की व्यवस्था और काम करने वाली सभी कुदरती ताकतों के बारे में सोचने का मज़ा लेना। अब, इस तरह से भगवान से प्यार करने की बात करना साफ़ तौर पर स्पिनोज़ा की यहूदी विरासत की भाषा है। सुनो, हे इज़राइल, हमारा भगवान एक है, और तुम अपने भगवान से अपने पूरे दिल से, अपने पूरे दिमाग से, अपनी पूरी ताकत से प्यार करोगे।

और इसलिए, यहीं से वह इस बात को उठाते हैं। लेकिन क्योंकि वह आस्तिक होने के बजाय पैन्थेइस्ट हैं, इसलिए आइटम चार ज़रूरी तौर पर आता है। कि भगवान में कोई जुनून नहीं है।

हमारे प्यार या नफ़रत से उन पर कोई असर नहीं पड़ता। भगवान खुद से पूरी तरह प्यार करते हैं, खुद को सभी साफ़ विचारों की पूरी समझ के साथ समझते हैं, लेकिन वह हमारे प्यार के ज़रिए खुद से प्यार करते हैं। अब, आप समझे ऐसा क्यों है? क्योंकि अगर भगवान खुद को सोच के उन सीमित तरीकों से समझते हैं, जो हमारे विचार हैं, तो भगवान खुद से उन सीमित तरीकों से प्यार करते हैं जो हमारे भगवान के लिए प्यार हैं।

तो, भगवान हमसे प्यार नहीं करते। हम कोई अलग इंसान नहीं हैं जिसे प्यार किया जाए। लेकिन भगवान हमारे प्यार के ज़रिए खुद से प्यार करते हैं।

और इसलिए, कोई जवाब नहीं है; भगवान से कैसे हो सकता है, जब भगवान ही सब कुछ है, जिसमें हम भी शामिल हैं। अब, यह स्पिनोज़ा के तर्क और भावना के नज़रिए का मेरा सारांश है। क्या आप इस पर थोड़ा सोचना चाहेंगे? या स्पिनोज़ा में हमारी सोच के इस स्टेज से यह अंदाज़ा लगाया जा सकता था? मेरा बस एक सवाल है... क्या आप थोड़ा ज़ोर से बोल सकते हैं? मुझे उनकी इच्छा का कॉन्सेप्ट ठीक से समझ नहीं आया और यह इसमें कैसे फिट बैठता है।

मेरा मतलब है, मुझे पता है कि वह ज़रूरी नहीं कि इस पर यकीन करे, लेकिन वह विल को कैसे समझता है? मैं अभी भी इस पर कन्फ्यूज़ हूँ । हाँ, ठीक है, अगर विल से आपका मतलब उस चेतना से है जो हमारे पास आज़ाद चॉइस की है, तो विल एक और आइडिया से ज़्यादा कुछ नहीं है, आप देखिए। यह पसंद करने, कन्फर्म करने या मना करने की चेतना है।

यह एक और आइडिया से ज़्यादा कुछ नहीं है। और बाकी सभी आइडिया की तरह, यह भी पहले के आइडिया की पूरी स्ट्रीम में होता है। इसलिए, इच्छा का काम चेतना की एक अवस्था है, जिसे कन्फ्यूज़ होकर आज़ाद माना जाता है, जबकि यह कारण से तय होता है।

वह उन चीज़ों के कुछ पहलुओं को कैसे समझाएंगे जिनका उदाहरण, मुझे लगता है, बाइबिल के अगापे प्रेम में मिलता है, इस मतलब में कि कभी-कभी ऐसा लगता है कि लोग ऐसी चीज़ें करेंगे जो उलटी हों, शायद... अपने फ़ायदे के लिए? मुझे लगता है, मुझे नहीं पता कि वह इसके बारे में कहीं बात करते हैं, लेकिन मेरा अंदाज़ा है कि वह जिस तरह से जवाब देंगे वह यह होगा कि खुद को नकारने वाला प्यार, उस तरह के दिमागी प्यार का बस एक पहलू है जो पूरी तरह से भगवान है, जो फिर किसी के अपने सुखों या इच्छाओं या हमारी दूसरी इमोशनल हालतों के लिए प्यार से बढ़कर है। वह हमारे भगवान से प्यार करने और उसके ज़रिए हमें वापस प्यार करने के बीच कैसे फ़र्क करते हैं? नहीं, नहीं। क्या मैंने कहा कि उनका हमसे प्यार करते हैं ? मुझे जो कहना चाहिए था, जो मैं कहना चाहता था, वह यह है कि हमारे प्यार के ज़रिए भगवान खुद से प्यार करते हैं।

अच्छा, ठीक है। ठीक है, तो फिर यह कैसे हुआ? अगर भगवान ही सब कुछ हैं और असल में हम भगवान से प्यार करते हैं, तो क्या इसका मतलब यह नहीं होगा कि अगर भगवान ने कहा कि सब कुछ है, तो भगवान भी हमसे प्यार करेंगे? नहीं, क्योंकि आप तभी कह सकते हैं कि भगवान हमसे प्यार करते हैं, जब हम भगवान के अलावा कुछ और हों। अब, हम नहीं हैं।

हम भगवान से प्यार कर सकते हैं क्योंकि भगवान हमसे कहीं ज़्यादा हैं। हम भगवान का हिस्सा हैं, और इसलिए हम उस पूरे हिस्से से प्यार कर सकते हैं जिसका हम हिस्सा हैं। समझे? लेकिन ऐसा कोई फोकस्ड प्यार नहीं है क्योंकि असल में, हमें ऐसे डायग्राम की ज़रूरत है, जहाँ यह हिस्सा पूरे हिस्से से प्यार करता है।

किसी खास हिस्से पर फोकस नहीं करना है । डेविड? उनकी नैतिकता। आप बात कर रहे थे कि हमें प्रकृति के सभी तरीकों को समझना होगा और उन्हें मानना होगा, लेकिन वह नतीजों के बारे में भी कुछ कहते हैं।

हाँ, एक नोट है जो उनकी सोच में चलता है, और मुझे लगता है कि यह पेज 148 के आस-पास है। वह नतीजों के ज्ञान के बारे में बात करते हैं। देखते हैं कि क्या मुझे वह सही हिस्सा मिल पाता है।

चलो देखते हैं। नहीं, अभी मुझे समझ नहीं आ रहा, लेकिन बाद में मुझसे पूछ लेना, डेविड, और शायद हम उसे ट्रैक कर सकें। ठीक है।

से रिश्ता शामिल होगा , लेकिन मुझे उस खास हिस्से को ट्रैक करना होगा । मुझे पक्का नहीं पता कि मैं समझ पाया हूँ या नहीं। मुझे लगता है कि आपने कहा कि भगवान हमारे प्यार से प्रभावित नहीं होते।

सही, सही। वह हमारे प्यार से खुद से प्यार करता है। मुझे समझ नहीं आता कि हमारे प्यार की कमी से उस पर क्या असर पड़ सकता है।

मेरा मतलब है, अगर उस पर हमारी नफ़रत का असर नहीं होता, तो वह खुद से प्यार कैसे कर सकता है ? लेकिन आप देखिए, हमारे प्यार की कमी के साथ कन्फ्यूज़्ड विचार भी होते हैं। अब, हमारे पास कन्फ्यूज़्ड विचार हैं, लेकिन भगवान के पास नहीं हैं। इसलिए भगवान के विचार एकदम साफ़ हैं और इसलिए उनके मन में विचार के ऑब्जेक्ट, जो कि वह खुद हैं, के लिए प्यार की कोई कमी नहीं है।

तो अगर हम उससे नफ़रत करते हैं, तो भी वह खुद से प्यार करता है? इससे भगवान खुद से प्यार करने से नहीं रुकते। तो अगर हम सब उससे नफ़रत भी करते, तो भी वह खुद से प्यार करता? मुझे हैरानी है कि वह इस पर क्या जवाब देगा। देखिए, अगर वह कहता है, हाँ, एक मिनट रुको।

हाँ, वह जवाब देगा। भगवान सभी इंसानों के जोड़ से कहीं ज़्यादा है। समझे ? और पूरी प्रकृति के मुकाबले इंसान बहुत कम हैं।

अब, पूरी प्रकृति जिसमें शायद जान-बूझकर प्यार करना शामिल न हो, फिर भी पूरी प्रकृति में अपनी जगह मान लेती है। और पूरी प्रकृति को मानने में ही प्यार का वह बराबरी का गुण होता है, जो इसलिए आपकी छोटी-मोटी नफ़रतों से कहीं ज़्यादा है। ठीक है, अब मैं वहाँ अंदाज़ा लगा रहा हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि वह इसी तरह जाएगा।

क्योंकि यह सिर्फ़ इंसानों में ही नहीं है कि आपके पास डबल पहलू है। यह होने के सभी पहलुओं में है। अब, होने के दूसरे पहलू शायद सचेत न हों।

स्पिनोज़ा प्रिंस ऑफ़ वेल्स की तरह फूलों और पौधों वगैरह से बात नहीं करते। नहीं, लेकिन वे यह मानते हैं कि चीज़ों का एक इंटेलेक्चुअल पहलू भी होता है जो हर समय चेतना में नहीं, बल्कि कम से कम समझने लायक क्रम में दिखता है। और वह समझने लायक क्रम वहाँ है।

आप समझे? हम जो देखते हैं वह अलग-अलग चीज़ों में चेतना की डिग्री है, जो भगवान में पूरी तरह से खुद को जानने की साफ़-साफ़ समझ से लेकर हममें साफ़ और अलग चेतना के पलों, तरीकों तक है, हालांकि हमारी सारी चेतना साफ़ और अलग नहीं है, जानवरों में ज़्यादा उलझी हुई चेतना से लेकर, बिना चेतना के लेकिन वेजिटेटिव जीवन में जो कुछ भी हो रहा है उसके प्रति रिस्पॉन्सिवनेस तक है। आप समझे? तो यह इंटेलेक्चुअल ऑर्डरिंग हर जगह है। क्या कोई सचेत प्राणी है जिसे भगवान के नाम से जाना जाता है, या वह सिर्फ़ उन शब्दों का इस्तेमाल कर रहा है जो काफ़ी पॉपुलर हैं? हाँ, ऐसा लगता है कि उसका मतलब एक सचेत प्राणी से है।

और मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि अगर भगवान के विचारों में पूरी क्लैरिटी और साफ़ सोच है, जैसा कि वह दावा करते हैं कि भगवान के पास है, तो इसका मतलब है कि वे होश में हैं। समझ के उस पूरे क्रम में, भगवान सबसे साफ़ और सबसे पूरे हैं। हाँ? उन्होंने कहा कि भगवान हमसे प्यार नहीं करते, लेकिन फिर मैं बस सोच रहा था कि कैसे, वह कहते हैं कि हमारी मुक्ति मुख्य रूप से अपने गाइड के लिए लगातार और हमेशा रहने वाले प्यार और इंसान के लिए एक भगवान के प्यार में है।

यह कैसे काम करता है? वह हिस्सा कहाँ है जहाँ उन्होंने ऐसा कहा है? 158. नीचे दायाँ कॉलम। ठीक है, जो कहा गया है, उससे हम साफ़ तौर पर समझते हैं कि हमारी मुक्ति कहाँ है, और ध्यान दें कि उन्होंने मुक्ति, आशीर्वाद, आज़ादी की तुलना भगवान के प्रति लगातार और हमेशा रहने वाले प्यार से की है, या इंसानों के प्रति भगवान के प्यार से।

अब, या तो या, या वे एक ही हैं? अब, जैसे-जैसे आप आगे पढ़ेंगे, आप देखेंगे, देखते हैं, क्या मैं उस हिस्से को ठीक से पहचान सकता हूँ। 158. देखते हैं।

हाँ। आपने जिस नोट की ओर ध्यान दिलाया, उसके ठीक ऊपर जो बात कही गई है, वह यह है कि भगवान, जितना खुद से प्यार करते हैं, उतना ही इंसान से भी प्यार करते हैं। इसलिए, इंसान के लिए भगवान का प्यार और भगवान के लिए दिमाग का प्यार एक जैसा है।

ठीक है? तो, भगवान के लिए लगातार और हमेशा रहने वाला प्यार, भगवान का इंसान के लिए प्यार है। तो, भगवान का किसी इंसान के लिए कोई खास, पर्सनल प्यार नहीं है। अब, इस प्यार या खुशी को बाइबिल महिमा कहती है, बिना वजह नहीं, कि चाहे इसे भगवान के लिए कहा जाए या मन के लिए, इसे सही मायने में आत्मा की मंज़ूरी कहा जा सकता है।

देखिए, यह एक्सेप्टेंस है, मान लेना। यह असल में ग्लोरी से अलग नहीं है। तो, वह मुक्ति, वह ब्लेस्डनेस, भगवान के उस सोचने वाले प्यार का मज़ा लेने के अलावा और कुछ नहीं है।

इससे ज़्यादा कुछ नहीं। बस इतना कि वह हमसे प्यार करता है और वह खुद से प्यार कर रहा है क्योंकि हम उसके प्यार में हैं। हाँ, लेकिन वह हमसे प्यार करता है, लेकिन नहीं, भगवान बदले में हमसे प्यार नहीं करता।

आप समझे? बल्कि, यह है कि भगवान पूरी कॉस्मिक व्यवस्था को पूरी तरह से समझते हैं और स्वीकार करते हैं जिसका हम हिस्सा हैं। आप समझे? जिसका हम हिस्सा हैं। पूरी कॉस्मिक व्यवस्था, जो वह खुद हैं।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि भगवान की तरफ से आपके लिए एक इंसान के तौर पर कोई पर्सनल लगाव है। ठीक है? इसी बात से वह पीछे हट रहे हैं। इसलिए, अगर आप धर्मग्रंथ के पर्सनलाइज़्ड मतलब में, इंडिविजुअलाइज़्ड मतलब में, या फिर आगे की ज़िंदगी के हिसाब से मोक्ष के बारे में सोच रहे हैं, तो वह स्पिनोज़ा नहीं है।

यह यहूदी धर्मग्रंथ हो सकता है, लेकिन यह स्पिनोज़ा नहीं है। ठीक है? ठीक है। मैं इस मोड़ पर स्पिनोज़ा को छोड़ने के लिए तैयार हूँ।

ठीक है? वो छोटी सी बात। अभी नहीं। हाँ, केल? हाँ।

20वीं सदी के हिसाब से, वह इसे डीमिथोलॉजाइज़ करना चाहते हैं। यानी, अपने रैशनलिस्टिक पैन्थेइज़्म के हिसाब से इसे फिर से समझना चाहते हैं। यहूदी धर्म का जो सार वह देखते हैं, उसे उस कहानी से अलग करना जिसमें वह आया था।

इसमें यहोवा की यह सोच भी शामिल है कि वह एक ऐसा प्राणी है जो खास चमत्कारी तरीकों से काम करता है वगैरह। यह कहानी का वह हिस्सा है जिसमें यहूदी धर्म का सार बताया गया है। क्या आप आज रिफॉर्म्ड यहूदी धर्म और ऑर्थोडॉक्स यहूदी धर्म के बीच के अंतर को जानते हैं? रिफॉर्म्ड यहूदी धर्म किसी तरह का... मैं कहने वाला था यूनिटेरियनिज़्म जैसा है।

लेकिन एक यूनिटेरियनिज़्म जिसमें पर्सनल रिश्तों के बजाय इंसानियत और पूरी प्रकृति के लिए कुछ खास आदर्शों पर ज़ोर दिया जाता है। एक नैतिक देवता के लिए जो न्याय और प्यार से जुड़ा है । फ़र्क समझे? क्या वह कहेंगे कि सभी धर्मों में भगवान के सार के बारे में कोई न कोई सच्चाई है? कि असल में , उनका विश्वास वही है जो उन्हें होना चाहिए? खैर, हाँ, मुझे नहीं पता कि वह ऐसा कहेंगे या नहीं। मुझे लगता है कि उन्हें शायद यह कहना होगा कि सभी धर्म भगवान के बारे में असल में कन्फ्यूज़्ड समझ हैं, जो एक ही सबको शामिल करने वाला है, जैसा कि उन्होंने बताया है।

मुझे लगता है कि उन्हें यह कहना ही होगा। और मुझे लगता है कि वह शायद यह भी कहेंगे कि कुछ लोग दूसरों के मुकाबले ज़्यादा कन्फ्यूज़ हैं। मुझे लगता है कि जिसकी भी पसंद होगी, वह वैसे भी यही कहेगा।

लेकिन वह सब कुछ कह देते थे। एक छोटा सा सवाल। आप अपने आइडिया कैसे साफ़ करते हैं? और मुझे लगता है कि उनका जवाब असल में दो तरह का होता है ।

एक, उस तरह के चिंतन से जिसमें अंदर की सुकरात जैसी द्वंद्वात्मकता शामिल हो, विचार कॉग्निटिव रूप से साफ़ हो जाते हैं। लेकिन दूसरा , भावनाओं को दूर करने में, जो हमारी सोच को कन्फ्यूज़ और भटकाती हैं। इसलिए आपको एक फोकस्ड और बिना भटके दिमाग की ज़रूरत है।

अब, ये दो बातें मैंने न सिर्फ़ स्पिनोज़ा से बल्कि उनसे पहले के डेसकार्टेस से भी सीखी हैं। जब वे साफ़ और अलग आइडिया के बारे में बात करते हैं, तो वे बिना ध्यान भटके मन या उस तरह के शब्दों पर ध्यान देने की बात करते हैं । इसे इमोशन की थ्योरी से जोड़ें।

और आपको दो क्राइटेरिया मिलते हैं। अब मुझे लगा कि आप यह सवाल पूछने वाले थे। अगर इसी तरह से हमें आज़ादी मिलती है, लेकिन अगर हम इसे चुनने के लिए किसी भी तरह से आज़ाद नहीं हैं, तो हम खुद को ऐसा करने के लिए कैसे मजबूर करेंगे? आप समझे? और मैं इस पर बस यही कह सकता हूँ कि, मुझे लगता है, हमारे पास यह है, यह एक आम ड्राइव है जो नेचर में चलती है, जिसमें हमारी मेंटल भटकन भी शामिल है।

तो आप बिल्ली और चूहे की तरह हैं , आप उसे जाने नहीं देंगे। असल में, क्या अभी यही नहीं हो रहा है? हम स्पिनोज़ा को जाने नहीं देंगे। आप देखिए, हम साफ़ होना चाहते हैं।

यह कैसे हो सकता है? तो ऐसा है जैसे कोई नैचुरल ड्राइव है जो हमें धकेलती रहती है, धकेलती रहती है। और जब हम सोचते हैं कि हम इस पर ध्यान देना चुन रहे हैं तो यह असल में किसी कन्फ्यूजिंग इमोशन और दूसरी इमोशन के बीच का बदलाव होता है। ठीक है।

ठीक है। अब, स्पिनोज़ा को छोड़ते समय, यह मत सोचिए कि हम इस तरह का एजेंडा छोड़ रहे हैं। हम ऐसा नहीं कर रहे हैं।

असल में, बोर्ड के इस हिस्से में, मैंने स्पिनोज़ा के एजेंडा की तीन मुख्य बातों पर डेसकार्टेस, स्पिनोज़ा और लाइबनिज़ के बीच एक बहुत ही छोटी तुलना की है। यानी, एक और कई थीम के बीच का रिश्ता , जो प्री-सोक्रेटिक्स तक जाता है। मन-शरीर का मुद्दा और आज़ादी और डिटरमिनिज़्म।

और ज़ाहिर है , ये शुरू से आखिर तक मुख्य थीम हैं। डेसकार्टेस के मामले में, आपको मन और शरीर के रास्ते का डुअलिज़्म मिलता है। एक थियोस्टिक कॉन्टेक्स्ट में डुअलिज़्म, तो चलिए इसे थियोस्टिक डुअलिज़्म कहते हैं।

ठीक है। और जब हम डेसकार्टेस में डुअलिज़्म की बात करते हैं, तो हम क्वालिटेटिवली बात कर रहे होते हैं। मेंटल और फिजिकल चीज़ों के बीच एक क्वालिटेटिव डुअलिटी होती है।

सोचने वाली चीज़ें और बड़ी चीज़ें। वे क्वालिटेटिवली अलग चीज़ें हैं। क्वालिटेटिव नज़रिए को क्वांटिटेटिव नज़रिए से अलग करें।

कितने मन हैं? कितने शरीर हैं? खैर, मुझे पता है कि आपके पास हर एक का सिर्फ़ एक है, लेकिन सब एक साथ। अब यह क्वांटिटेटिव होगा। और बेशक, डेसकार्टेस में खास बात यह है कि वह क्वालिटेटिव है, क्वांटिटेटिव नहीं, डुअलिस्ट है।

ज़ाहिर है। क्वालिटेटिव डुअलिस्ट। हम कहते हैं कि स्पिनोज़ा एक मोनिस्ट हैं।

हाँ, वह एक क्वालिटेटिव मोनिस्ट है। अब इसे वापस ले लो। वह एक क्वांटिटेटिव मोनिस्ट है।

एक क्वांटिटेटिव मोनिस्ट। नंबर के हिसाब से, एक सब्सटेंस है। एक बीइंग है।

आप देखिए। अब क्वालिटेटिव क्या हैं? एक होने के क्वालिटेटिव पहलू। लेकिन वह क्वालिटेटिव डुअलिज़्म वाला एक क्वांटिटेटिव मोनिस्ट है।

प्लूरलिज़्म। दूसरी तरफ, लाइबनिज़ एक प्लूरलिस्ट हैं। कितने सब्सटेंस हैं? बहुत सारे सब्सटेंस।

वह एक क्वांटिटेटिव प्लूरलिस्ट हैं। एक अनिश्चित संख्या। क्वांटिटेटिव प्लूरलिस्ट।

लेकिन वह एक क्वालिटेटिव प्लूरलिस्ट भी हैं। क्योंकि इतनी सारी अलग-अलग चीज़ें क्वालिटेटिवली अलग-अलग होती हैं। अलग-अलग।

वह जो कर रहे हैं, वह पुराने ज़माने की सोच को फिर से पेश कर रहा है, जिसमें ऊँच-नीच का क्रम होता है। एक तरह का सादृश्य। जिसमें सभी जीवों में एक जैसे गुण होते हैं, लेकिन वे एक-दूसरे से अलग होते हैं।

तो आपके पास लाइबनिज़ की क्वांटिटेटिव प्लुरैलिटी के अंदर क्वालिटेटिवली अंतर की डिग्री है। अब हम इसे थोड़ी देर में डिटेल में बताएंगे। मैं चाहता हूं कि आप पहले कंट्रास्ट समझें।

अब जब मन-शरीर की बात आती है, तो डेसकार्टेस, बेशक, कारण-कार्य संबंध। स्पिनोज़ा, बेशक, डबल एस्पेक्ट। लाइबनिज़, पैरेललिज़्म।

हाँ, मन और शरीर अलग-अलग चीज़ें हैं। शरीर एक बहुत ही कॉम्प्लेक्स चीज़ है। मन एक सिंपल चीज़ है।

लेकिन कोई कॉज़ल इंटरेक्शन नहीं है। कोई कॉज़ल इंटरेक्शन नहीं। वे बस ऐसे बने हैं और, अगर आप चाहें तो, पहले से प्रोग्राम किए हुए हैं कि वे एक-दूसरे के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हैं।

वे एक-दूसरे के साथ एकदम सही समय पर रहते हैं। यह आइडिया शरीर की हालत से एकदम सही मेल खाता है, पहले से तय, पहले से तय। तो लाइबनिज़ के मामले में पैरेललिज़्म।

इच्छा की आज़ादी के मामले में , डेसकार्टेस एक इनडिटरमिनिस्ट हैं। इच्छा किसी बात को मानने या न मानने के लिए आज़ाद है।

इसलिए इसे कंट्रोल करना होगा , कंट्रोल करना होगा । स्पिनोज़ा अंदरूनी कारण प्रक्रियाओं की वजह से एक डिटरमिनिस्ट हैं। एक अंदरूनी डिटरमिनिज़्म।

लाइबनिज़, फिर से अलग। उन्हें आज़ादी और डिटरमिनिज़्म एक जैसे लगते हैं। एक जैसे।

क्योंकि वह आज़ादी को मैकेनिकल वजहों, मशीनी चीज़ों से आज़ादी के तौर पर नहीं , बल्कि लक्ष्यों, मकसदों को पाने, अपनी अंदर की सोच को पूरा करने की आज़ादी के तौर पर सोच रहे हैं। क्या यह स्कॉलैस्टिसिज़्म जैसा लगता है? हाँ, है। आप देखिए, लाइबनिज़ में ये बातें इसलिए आती हैं क्योंकि वह मशीनी साइंस को आखिरी वजह के तौर पर खारिज कर रहे हैं।

वह इस बात से संतुष्ट नहीं है कि यह काफी अल्टीमेट है। यह केवल एक शानदार लेवल पर डील कर रहा है। वह यह सवाल पूछता है।

यह मैकेनिकल साइंस हमें बताता है कि हर चीज़ को मैटर और मोशन के हिसाब से समझाया जाता है। खैर, जब मैटर टूट जाता है, और मोशन बंद हो जाता है, तो क्या बचता है? क्या बचता है? और उसका जवाब? मैटर नहीं, बल्कि एनर्जी। फोर्स! फोर्स।

दूसरे शब्दों में, लाइबनिज़ 1700 के आस-पास एनर्जिस्टिक फ़िज़िक्स के बारे में सोच रहे थे। एनर्जिस्टिक फ़िज़िक्स एक टेलियोलॉजिकल मेटाफ़िज़िक है जहाँ सब कुछ एंड-ओरिएंटेड है, और अंदर एन्टेलेचीज़ हैं। हाँ।

हर चीज़ का अपना नेचर होता है। और उसी नेचर के काम करने के तरीके में ही टेलियोलॉजी साफ़ दिखती है। तो, वह शुरुआती तस्वीर बताती है कि लाइबनिज़ क्या करने वाले हैं।

चलिए देखते हैं। हाँ, मैं इसे ऐसे कहता हूँ। लाइबनिज़, जो लगभग 1700 में रहते थे, उन्होंने साइंस और धर्म के बीच उभरते हुए झगड़े देखे।

उन्हें लगा कि हॉब्स और स्पिनोज़ा जैसे लोगों में यह साफ़ दिखता है। साइंस और धर्म के बीच झगड़े। और काफ़ी बड़े पैमाने पर ।

उन लोगों से कहीं ज़्यादा। मशीनी विज्ञान ईसाई धर्म के लिए समस्याएँ खड़ी करता है। इंसानी आज़ादी से जुड़ी समस्याएँ।

इंसान की आत्मा के बारे में समस्याएं। इसलिए, आने वाले जीवन के बारे में समस्याएं। और भगवान के स्वभाव के बारे में समस्याएं और वह प्रकृति की दुनिया से कैसे जुड़ा है, और उसका उससे क्या संबंध है।

और मैकेनिस्टिक साइंस में इन छिपी हुई समस्याओं की वजह से, जिसे एक ऐसी फिलॉसफी के तौर पर माना जाता है जो आपको असलियत के असली रूप के बारे में बताती है, वह मैकेनिस्टिक साइंस को असलियत के असली रूप के बारे में बताने वाले तरीके के तौर पर खारिज कर देता है। वह मैकेनिस्टिक साइंस के बारे में एंटी-रियलिस्ट है। हालांकि वह जिस तरह के साइंस की कल्पना करता है, उसके बारे में वह रियलिस्ट है।

अब, मैं यह भी कहना चाहूंगा कि लाइबनिज़ प्रोफेशनली एकेडमिक नहीं थे। वह एक जर्मन डिप्लोमैट थे। लगातार शटल डिप्लोमेसी में लगे रहते थे।

लगातार सड़क पर। इसीलिए वह स्पिनोज़ा की तरह सिस्टमैटिक ट्रीटीज़ के साथ नहीं चलते। लेकिन एंथोलॉजी में हमारे पास जो छोटे काम हैं, उनमें से कुछ।

वह अपने समय में पूरे यूरोप में चल रहे धार्मिक युद्धों को लेकर चिंतित हैं। और एक एकजुट यूरोप और एक एकजुट ईसाई धर्म के लिए काम करने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए, वह इस तरह की बातचीत में शामिल होने की कोशिश कर रहे हैं।

और, ज़ाहिर है, ऐसा करने के लिए , विरोधी पार्टियों को एक साथ लाने के लिए, उन्हें एक फिलॉसॉफिकल नज़रिए की ज़रूरत है ताकि कुछ बुनियाद मिल सके जिससे वे अपील कर सकें। और उन्हें यकीन है कि एक मशीनी साइंस, जो सिर्फ़ विरोधी ताकतों की बात कर सकता है, कोई मकसद, अंदरूनी मकसद नहीं दे सकता , जो उस तरह के यूरोप का आधार दे सके जिसकी वह कल्पना करते हैं। तो, धर्म और साइंस के बीच टकराव।

अब, असल में, जब हम लाइबनिज़ के पास जाते हैं, तो हम देखते हैं कि यह न सिर्फ़ मशीनी सिस्टम पर सवाल उठाता है और एक नया सिस्टम बनाता है जो इंसानी दिमाग और इंसानी आज़ादी पर ज़्यादा असरदार तरीके से फोकस करेगा। यह न सिर्फ़ मशीनी सिस्टम पर सवाल उठाता है, बल्कि तर्कवादी नज़रिए पर भी सवाल उठाता है। लाइबनिज़ में आप पाते हैं कि धार्मिक विचार उनकी सोच में इस तरह से शामिल हो रहे हैं, जैसा कि स्पिनोज़ा और डेसकार्टेस में भी नहीं था।

डेसकार्टेस उन नतीजों से खुश थे जो उनके धर्म से मेल खाते थे। लाइबनिज़ एक मकसद वाले बनाने वाले की अंदरूनी सोच चाहते थे, जो बनाने में एक्टिव हो। और यही बात उनकी पूरी सोच में है।

अब, इसे ध्यान में रखते हुए, एक कदम और आगे, और अभी भी इंट्रोडक्शन के तौर पर। मैंने अब तक जो कहा है, उससे साफ़ है कि लाइबनिज़ के लिए मामले का सार सब्सटेंस का कॉन्सेप्ट होगा। सब्सटेंस का कॉन्सेप्ट।

वह डेसकार्टेस के सब्सटेंस, इस मामले में मैटेरियल सब्सटेंस, के नज़रिए के खिलाफ हैं, जो सिर्फ़ जगह घेरने वाली फैली हुई चीज़ है। क्योंकि मैटर की यह सोच मैटेरियल बॉडीज़ की दूसरी बहुत बेसिक प्रॉपर्टीज़, जैसे इनर्शिया, को समझाने में फेल हो जाती है। यह बात कि कोई बॉडी मोशन या रेस्ट की हालत में बनी रहती है, जिसमें वह नैचुरली होती है।

और इसलिए उनका तर्क है कि एक्सटेंशन कोई बेसिक प्राइमरी प्रॉपर्टी नहीं है। यह बेसिक के बजाय डेरिवेटिव है। एक एक्सटेंडेड सब्सटेंस ज़्यादा बेसिक इंग्रीडिएंट्स का मिला-जुला रूप होता है।

और एक्सटेंशन के गुण उन बेसिक चीज़ों के बीच के रिश्तों की वजह से होते हैं। डेमोक्रिटस और एटमिस्ट्स ने जैसा कहा है, यह सिर्फ़ एक्सटेंडेड चीज़ों का कलेक्शन नहीं है। एक शरीर नॉन-एक्सटेंडेड चीज़ों का मिला-जुला रूप है।

एक्सटेंशन, कम्पोजिट का नतीजा है। इसलिए, सब्सटेंस के असली इंग्रीडिएंट्स वही हैं जिन्हें वह मोनाड कहते हैं। और वे, सभी रियलिटी की बेसिक यूनिट्स, एक्सटेंडेड चीज़ों की यूनिट्स के बजाय फोर्स, एनर्जी की यूनिट्स हैं।

अब, इसी तरह, वह स्पिनोज़ा के सब्सटेंस के कॉन्सेप्ट से खुश नहीं हैं। क्योंकि स्पिनोज़ा के डिटरमिनिज़्म के अनुसार, पूरी प्रकृति में असल में कुछ भी कंटिंजेंट नहीं है। हर चीज़ की अपनी ज़रूरतें होती हैं ।

और जो अचानक, अचानक हो सकता है, उस पर कोई कंटिंजेंसी नहीं है। उन्हें सब्सटेंस के बारे में अरस्तू का कॉन्सेप्ट पसंद नहीं है। क्योंकि अरस्तू के लिए, एक प्राइमरी सब्सटेंस अभी भी एक कंपोजिट है, न कि बेसिक।

और अरस्तू का सब्सटेंस का प्राइम मैटर और फॉर्म में एनालिसिस भी हमें मैटर के बारे में काफी नहीं बताता है। प्राइम मैटर इनर्शिया को उतना नहीं समझाता जितना डेसकार्टेस के सब्सटेंस के कॉन्सेप्ट ने इनर्शिया को समझाया था। और जब वह न्यूटन की फिजिक्स को देखता है, तो उसे न्यूटन का कॉन्सेप्ट पसंद नहीं आता, न सिर्फ मैटर, सब्सटेंस का, बल्कि स्पेस और टाइम का भी।

क्योंकि यह एक जैसी, अनंत, खाली जगह, जिसमें फिक्स जगहें हैं जहाँ आप चीज़ें रख सकते हैं, न्यूटन कहते हैं, यह पूरी तरह से एक एब्स्ट्रैक्शन है जिसका असलियत में कोई बेसिस नहीं है। इसलिए वह टाइम और स्पेस की रिलेटिविटी के लिए आर्गुमेंट देते हैं। 1700 में रिलेटिविटी।

अब, मुझे एहसास हुआ कि पहले क्या आया, साइंस या फिलॉसफी, इस पर बहस कुछ-कुछ मुर्गी और अंडे वाली बहस जैसी है। लेकिन यह देखना बहुत दिलचस्प है कि डेमोक्रिटस मैकेनिस्टिक साइंस से सैकड़ों साल पहले कैसे थे और लाइबनिज़ बाद में जो आया उससे कुछ सौ साल पहले। खैर, स्पेस के बारे में वह यह कहते हैं।

जहां तक मेरी अपनी राय है, मैंने एक से ज़्यादा बार कहा है कि मैं स्पेस को सिर्फ़ रिलेटिव चीज़ मानता हूं। मैं इसे को-एग्जिस्टेंस का एक ऑर्डर मानता हूं, जैसे टाइम एक के बाद एक होने वाली घटनाओं का एक ऑर्डर है। क्योंकि स्पेस, पॉसिबिलिटी के हिसाब से, एक ही समय में मौजूद चीज़ों का एक ऑर्डर दिखाता है, जिन्हें एक साथ मौजूद माना जाता है।

और जब कई चीज़ें एक साथ देखी जाती हैं, तो चीज़ों का आपस में क्रम पता चलता है। और फिर थोड़ी देर बाद , वह कहते हैं, असल में, अगले पैराग्राफ में, स्पेस बिल्कुल एक जैसा है । इसमें चीज़ें रखे बिना, स्पेस का एक पॉइंट स्पेस के दूसरे पॉइंट से किसी भी तरह से बिल्कुल अलग नहीं होता है।

इससे यह नतीजा निकलता है कि यह नामुमकिन है कि कोई वजह हो कि भगवान, ध्यान दें कि भगवान वजहों में कैसे शामिल हैं, आप देखिए। यह नामुमकिन है कि कोई वजह हो कि भगवान ने, शरीरों की एक जैसी हालत को बनाए रखते हुए, उन्हें स्पेस में एक तरह से रखा हो और दूसरे तरीके से नहीं। या फिर हर चीज़ को पूरब को पश्चिम में बदलकर बिल्कुल उलटे तरीके से क्यों नहीं रखा?

अगर स्पेस सिर्फ़ ऑर्डर, रिलेशन, बिना बॉडीज़ के कुछ भी नहीं है, तो वे दो स्टेट्स, एक जैसी अभी है, दूसरी, बिल्कुल उलटी, एक दूसरे से बिल्कुल अलग नहीं होंगी। अगर स्पेस पूरी तरह से खाली है और कुछ भी नहीं है। स्पेस समय में चीज़ों के ऑर्डर्ड रिलेशनशिप की खाली संभावना है।

ठीक है, समय के मामले में भी यही बात है। मान लीजिए कोई पूछे कि भगवान ने हर चीज़ एक साल पहले क्यों बनाई? और वही व्यक्ति यह अंदाज़ा लगाए कि भगवान ने कुछ ऐसा किया है जिसके बारे में यह मुमकिन नहीं है कि ऐसा करने का कोई कारण हो और न हो। जवाब यह है कि यह अंदाज़ा सही होगा अगर समय, समय में मौजूद चीज़ों से कुछ अलग होता।

अगर स्पेस-टाइम जैसी कोई घटना नहीं होती, तो समय भी नहीं होता, आप समझ रहे हैं। इसलिए वह स्पेस और टाइम के न्यूटनियन कॉन्सेप्ट को छोड़ देता है। अब, क्या हो रहा है? मैकेनिस्टिक साइंस, न्यूटनियन साइंस के चार खास कॉन्सेप्ट हैं।

मैटर, फोर्स, या मोशन, मोशन को फोर्स, मैटर, स्पेस और टाइम के हिसाब से समझाया जाता है। स्पेस और टाइम अपने आप में कुछ भी नहीं हैं। ये शब्द किसी चीज़ के बारे में नहीं बताते।

मैटर और मोशन आखिरी चीज़ें नहीं हैं । आखिरी चीज़ है फ़ोर्स, एनर्जी। तो आपके पास न्यूटनियन फ़िज़िक्स के चार खास कॉन्सेप्ट्स को पूरी तरह से खारिज़ करने का तरीका है, और उनकी जगह एक टेलियोलॉजिकल सिस्टम में फ़ोर्स या एनर्जी का कॉन्सेप्ट है।

भगवान के मकसद इसमें शामिल होने चाहिए । खैर, मैं यहीं रुकता हूँ। हमारे पास कुछ पल हैं।

सवाल? कमेंट्स? या आप चाहते हैं कि मैं उनके मोनाड और मोनाडोलॉजी के बारे में डिटेल में बताऊं? मुझे लगता है आप ऐसा चाहते हैं। डॉ. चैपल? हां, शायद मुझे सवाल का जवाब देने के लिए एक फ्रेमवर्क देने के लिए डिटेल में बताना चाहिए। ठीक है।

मैं उनके मोनाड के बारे में कुछ और कहना चाहता हूँ। जब आप पहली बार लाइबनिज़ से मिलते हैं, तो एक आदत होती है कि आप उनके मोनाड को एक अजीब कल्पना की उपज मानते हैं। इस आदत से बचें।

इसे एक क्वासी-साइंटिफिक हाइपोथीसिस की तरह देखें, जो मैटर, पार्टिकल, या एनर्जी की यूनिट, या बस क्या है, के नेचर के बारे में आजकल की चर्चाओं का अंदाज़ा लगाती है। दूसरे शब्दों में, इसे मैटर के एनर्जेटिक हिस्सों के बारे में एक हाइपोथीसिस के तौर पर देखें, जो मैटर के सॉलिड पेलेट्स से अलग है। ठीक है।

अब, इस बात को ध्यान में रखते हुए, वह यह सुझाव देते हैं कि मोनाड ताकत की यूनिट हैं, जो सिर्फ़ उनकी भूख और समझ की डिग्री में अलग होती हैं। भूख और समझ की डिग्री। भूख क्या है? लेकिन, असल में, स्पिनोज़ा का कार्नाटस, वह ड्राइव, वह ज़ोर, वह अंदरूनी धक्का, जो सभी कुदरती प्रोसेस में लगता है, जिसमें हमारी अपनी शारीरिक एनर्जी और हमारी इच्छा , इच्छा और चाहत शामिल हैं।

देखा ? तो, हमेशा यह कार्नेटस, यह भूख, यह ड्राइव होती है। जैसे कि, और यहाँ मैं टेलियोलॉजिकल सोच को समझ रहा हूँ, जैसे कि कोई लालच किसी लक्ष्य की ओर खींच रहा हो। इसमें फ़ाइनल कॉज़ेशन की सोच शामिल है।

हाँ, स्पिनोज़ा में कार्नेटस पूरी तरह से एक असरदार वजह, पुश लगता है। लाइबनिज़ में, मैं कहना चाहता हूँ कि यह पुल है, लेकिन यह पुश नहीं है। यह एक तरह से पुश और पुल, दोनों है।

दूसरे शब्दों में, वह कुशल और अंतिम कारण को जोड़ता है। आप देखिए, एक धक्का और खिंचाव। प्रकृति की पूरी प्रक्रिया में ऊर्जा भर जाती है।

तो, भूख की डिग्री। ताकि चट्टानें आपके कुचलने का विरोध करें। और पौधे और छोटे पौधे उगें।

और शरीर की प्रक्रियाएं चलती रहती हैं। वगैरह। लेकिन साथ ही, समझने की क्षमता की डिग्री भी।

अब, ज़ाहिर है, अप्पेर्सेप्शन, परसेप्शन शब्द का मिक्सचर है। अवेयरनेस, कॉन्शसनेस। अवेयरनेस, कॉन्शसनेस, और एनवायरनमेंट से रिलेशन की कई डिग्री होती हैं।

माहौल के प्रति रिस्पॉन्सिवनेस। हमेशा होश में नहीं, लेकिन होश के कुछ हद तक मिलते-जुलते। जैसे गर्मी के सूखे के बाद इस पतझड़ में मैंने घास के बीज बोए थे।

अनजाने में ही उग आया और अपना सिर दिखाने लगा। और, हाँ, उसका कुछ हिस्सा अभी भी कीचड़ के ऊपर ज़िंदा है। उसे पता है कि उसे क्या करना है, एक अवेयरनेस।

खैर, गर्मी और नमी के प्रति बहुत, बहुत कम रिस्पॉन्स। तो भूख की डिग्री और इंसानी भूख के कम-डिग्री वाले एनालॉग होते हैं। समझ की डिग्री और इंसानी समझ के कम-डिग्री वाले एनालॉग।

होने की हायरार्की में नीचे तक। और होने की इस हायरार्की में, वह अलग-अलग तरह के मोनाड में फर्क करता है। सबसे नीचे, आपके पास सिर्फ मोनाड होते हैं।

बेयर मोनाड. फिर, जैसे ही आप एक कदम आगे बढ़ते हैं, आपके पास सोल मोनाड होते हैं. या, अगर आप चाहें, तो लाइफ मोनाड.

और फिर आपके पास स्पिरिट मोनाड होते हैं। और सबसे ऊपर, आपके पास सुप्रीम मोनाड होता है। अब, बेयर मोनाड में कोई खास अवेयरनेस या चेतना नहीं होती।

एक जगह पर, वह कहते हैं कि ऐसा लगता है जैसे वे हैरान, स्तब्ध, बेहोश हैं। खैर, इसका मतलब यह नहीं है कि कोई पहले से बनी हुई इच्छा या समझ नहीं है। आपके पास ऐसी जीवित चीज़ें हो सकती हैं जो बेहोश हों।

और ऑर्गेनिक प्रोसेस चलते रहते हैं। और उनकी तुलना एक बेहोश जीव से ज़्यादा एक जीव से है, एक बेहोश मशीन से नहीं। एक बेहोश मशीन अपने आप कुछ नहीं करती।

एक बेहोश जीव खुद ही बहुत कुछ करता है। तो, नीचे नंगे मोनाड होते हैं। सोल मोनाड, जो जानवर को जीवन देते हैं।

तो, यहाँ आपके पास बेजान चीज़ें हैं। यहाँ आपके पास जानवरों का जीवन है। और, ज़ाहिर है, हायरार्की में बीच की सभी डिग्री।

और सोल मोनाड में, आपके पास लगातार कुछ सचेतन समझ होती है। कुछ एडवांस्ड जानवरों में, आपके पास याद रखने के अर्थ में कुछ याददाश्त होती है। आपके पास ऐसी आदतें होती हैं जो सोल मोनाड में बनी होती हैं।

खैर, स्पिरिट मोनाड्स में, यहीं पर इंसानी आत्मा आती है। आपके पास एब्स्ट्रैक्ट सोच होती है । रीज़निंग प्रोसेस।

सेल्फ-कॉन्शसनेस, सिर्फ़ स्टिम्युलाई के बारे में सेंस अवेयरनेस नहीं, बल्कि सेल्फ-अवेयरनेस। हम अपने बारे में सोचते हैं। इंसान और जानवर ही ऐसे हैं जो ज़िंदगी के मतलब और मकसद के बारे में चिंता करते हैं।

जैसा कि कभी-कभी कहा जाता है। और इसलिए, स्पिरिट मोनाड ही रूलिंग चीज़ है, इंसानी नेचर में रूलिंग एनटेलेची है। और फिर सुप्रीम मोनाड है।

ईश्वर। सबसे बड़ा मोनैड। पूरी चेतना , यानी, सब कुछ जानने वाला , सब कुछ जानने वाला।

और वह पूरी साफ़-साफ़ और साफ़-साफ़ कहेगा कि भगवान पूरी तरह से होश में है और सब कुछ जानता है। पूरी तरह से ताकतवर , यानी, बेहिसाब इच्छा, जोश, प्रेरणा , सबसे बड़ी इच्छा। भगवान, जो एक ज़रूरी चीज़ है, उसका होना ही उसका असली मतलब है।

तो लाइबनिज़ भी ऑन्टोलॉजिकल तर्कों के लिए खुले हैं, आप देखिए। अब, बात यह है कि आपके पास अलग-अलग तरह के कंपोजिट में ये अलग-अलग तरह के मोनाड हैं। मान लीजिए, कंपोजिट में सिर्फ़ मोनाड सिर्फ़ भौतिक चीज़ें, फ़िज़िकल ऑब्जेक्ट बनाते हैं।

सोल मोनाड, बेयर मोनाड के साथ मिलकर जानवर बनाते हैं। स्पिरिट मोनाड, सोल मोनाड और बेयर मोनाड के साथ मिलकर इंसान बनाते हैं, आप देखिए। तो, अरिस्टोटेलियन और स्कॉलैस्टिक चीज़ों की तरह, जहाँ आपके पास वेजिटेबल सोल और एनिमल सोल और रैशनल सोल होती है, आप देखिए, उस पूरी हायरार्की का एक रीकंस्टीट्यूशन।

तो, आपको क्या पसंद है, होने का हायरार्की या मैकेनिस्टिक मेटाफ़िज़िक? खैर, हम अगली बार इस पर बात करेंगे। धन्यवाद।